स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

मानव्य विद्याशाखा अंतर्गत पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

“हिंदी-दलित कवयित्रियों के काव्य का अनुशीलन”

शोधछात्रा

रंजना वामनराव बिरादार

(एम.ए. (हिंदी), बी.एड., सेट)

शोधनिर्देशक

डॉ.मनोहर भंडारे

(एम.ए. (हिंदी), एम.फिल., पीएच्.डी., सेट)
सहाय्यक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग
श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय,उदगीर
जि.लातूर 413517

अनुसंधान केंद्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

मार्च, 2016

"हिंदी-दलित कवयित्रियों के काव्य का अनुशीलन"

प्रास्ताविक :

हिंदी दलित साहित्य का प्रारम्भ कविता से हुआ है। हिंदी में नाथ और सिद्ध कवियों के बाद दलित चेतना का पहला विस्फोट मध्यकाल के संत साहित्य में हुआ। कई शताब्दियों से चली आयी धार्मिक व्यवस्था को पहली बार निर्गुण संतों ने सामाजिक धरातल पर चुनौती दी थी। आधुनिक काल में दलित कविता का प्रारंभ सितंबर, 1914 में 'सरस्वती' में प्रकाशित हीरा डोम की भोजपुरी कविता से माना जाता है, जिसका शीर्षक था 'अछूत की शिकायत' । लेकिन आठवें और नवें दशक में हिंदी में दलित कवियों की एक पूरी पीढ़ी तैयारी के साथ साहित्य में प्रवेश कर चुकी थी, जैसे- ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, मलखान सिंह, श्यौराजसिंह बेचैन आदि। नवें दशक के दलित कविता ने नयेपन से प्रवेश किया था। इनमें स्वतंत्रता, लोकतंत्र, राजनीति, समाजवाद, प्रगतिवाद, जनवाद, सबकी नयी व्याख्या की। इस कविता के प्रमुख हस्ताक्षरों में मलखानसिंह, ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, सोहनपाल सुमनाक्षर और जयप्रकाश कर्दम उल्लेखनीय हैं। इसी दौर में दलित कवयित्री की कविता भी रची गयी पर समीक्षकों ने इसपर ध्यान नहीं दिया, जिसमें आधे समाज का पूरा दर्द था। दलित कवयित्री को दलित साहित्य में स्त्री की अनुपस्थिति महसूस हुई और जहाँ व्यक्त हुई वह भी अधूरे रूप में किंतु दोहरे अभिशाप से अभिशप्त दलित कवयित्रियों ने अपनी उपस्थिति अपनी वेदना और अपनी दृष्टि के साथ कविता में दर्ज की है। दलित कवयित्री की साहित्य ने दलित कक्षा को और अधिक विस्तार दिया; जिससे दलित कविता और अधिक लोकतांत्रिक हुई। इन कवयित्रियों ने काव्य-यात्रा के जरिये जहाँ एक ओर वर्णव्यवस्था का विरोध किया तो दूसरी ओर अपने ही पुरुषी मनोवृत्ति के खिलाफ आवाज उठायी है। अपने दुय्यमत्व को नकारकर अम्बेडकरी विचारों से प्रभावित होकर अपने होने का एहसास कविता के माध्यम से व्यक्त किया, जैसे- सुशीला टाकभौरे, अनिता भारती, विमल थोरात, पूनम तुषामड़, रजनी तिलक, रजनी अनुरागी, रजतरानी मीनू आदि की कविता में।

दलित कवयित्रियों का काव्य सामाजिक बदलाव का आह्वान करता है। इनके कविताओं में आक्रोश है, गुस्सा है, साथ-साथ संवेदना, मानवीयता और सब्र भी है। डॉ.सुशीला टाकभौरे द्वारा लिखित 'हमारे हिस्से का सूरज' कवितासंग्रह में दलित की यातना, समस्या और वर्तमान स्थिति का स्वर है। रजनी तिलक ने दलित नारी की शिक्षा और 'बुद्ध चाहिए युद्ध नहीं' जैसे विविध विषयों को काव्य के विषय बनाये; जिसमें क्रांतिकारी विचारों का परिचय है। पूनम तुषामड़ का 'माँ मुझे मत दो' काव्यसंग्रह में दर्द के दरियों को पार करना, अपने लडखड़ाते अस्तित्व को पहचानना, सदियों से चली आयी दृढ़मूल परम्पराओं को नकारना आदि का चित्रण है। अतः इसीलिए समग्र दलित कवयित्री की कविता स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन एवं शोध की माँग करती है। इसलिए इन कवयित्रियों के काव्य को ही शोध का विषय बनाया। इनकी कविता में प्रवृत्ति, प्रकृति एवं अभिव्यक्ति के स्तर में जितनी समानताएँ हैं उतनी ही भिन्नताएँ भी। इसलिए इस शोध में तुलनात्मक पद्धति को अच्छा अवसर मिलेगा। अतः प्रस्तुत कविता स्वतंत्र शोध और समीक्षा की माँग करती है।

विषय चयन की प्रेरणा :

मुझे छात्र जीवन से ही कविता के प्रति रूचि रही है। मेरे पढ़ने में हिंदी की कई कविताएँ आयी और मुझे सबसे ज्यादा रुचि थी तो दलित साहित्य के प्रति। इस कारण मैंने दलित साहित्य और दलित कविताओं को सूक्ष्मता से पढ़ा। मैंने दो-तीन दशकों के दलित रचनाकारों में माताप्रसाद, ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, कँवल भारती, जयप्रकाश कर्दम, श्यौराजसिंह बैचेन, डॉ.दयानंद बटोही, एन.सिंह की कविताएँ पढ़ी। किंतु इसमें व्यक्त दलित स्त्री पुरुषप्रधान मानसिकता से व्यक्त हुई है। इसमें स्त्री अनुभूति की स्त्री नहीं थी जो दलित कवयित्री की कविता में व्यक्त हुई है और फिर मैं सुशीला टाकभौरे, पूनम तुषामड़, अनिता भारती, रजनी अनुरागी, कावेरी की कविता पढ़ती गयी। मैं स्त्री होने से उस स्त्री की अनुभूति को जानने समझने लगी। दलित कवयित्रियों का काव्य अध्ययन, अनुसंधान एवं समीक्षा के क्षेत्र में वंचित ही रहा है। फिर मन में बात आयी की इसे ही शोध का विषय क्यों न बनाए ! इस बारे में मेरे मार्गदर्शक डॉ.मनोहर भंडारे सर से कई बार विचार विमर्श

हुआ। उसकी फलश्रुति “हिंदी-दलित कवयित्रियों के काव्य का अनुशीलन” नामक विषय का चयन हुआ।

विषय का महत्त्व :

दलित कवयित्रियों के काव्य में स्पष्टता, प्रखरता एवं स्त्रीविषयक तथ्यात्मकता का चित्रण मिलता है। इन्होंने दलित नारी के ही नहीं तो पूरे समाज के जीवन यथार्थ को वाणी दी। मौन को त्यागकर सच्चाई के बयान को कविता का यथार्थ बनाया। इसी यथार्थ का अन्वेषण ही विषय के महत्त्व को रेखांकित करता है। दलित कवयित्रियों ने काव्य से केवल आत्मचेतना भर देने का ही काम नहीं किया, बल्कि अपने भीतर की अपार शक्ति को जानने और जगाने का आवाहन भी किया है। यह अपने आप अलग महत्त्व है। प्रस्तुत कविता अन्याय एवं अधर्म के विरोध में खड़ी होती है। भाईचारा, मानवता एवं समता का समर्थन ही कविता का केंद्र है। प्रस्तुत काव्य स्त्री के कडवे सच को दर्शाता है; जिसका समाजशास्त्रीय दृष्टि से भी अलग महत्त्व है। अम्बेडकरी विचार ही इन कविताओं की प्रधान प्रवृत्ति है। आज दलित कवि की तुलना में दलित कवयित्रियों की मात्रा भले ही कम हो, लेकिन उनकी कविता के तेवर निश्चित ही प्रखर हैं और विशेष है इसमें कोई संदेह नहीं। यह कहना सही होगा की दलित कवयित्रिओं की कविता अब स्वतंत्र शोध और समीक्षा की माँग करती है। ऐसे उपेक्षित विषय पर शोध होना अपने आप में एक अलग महत्त्व है।

शोध विषय का उद्देश्य :

1) प्रस्तुत काव्य में व्यक्त नारी जीवन के यथार्थ को जानना।

2) प्रस्तुत कविता की प्रेरणा, प्रकृति और प्रवृत्ति को खोजना।

3) काव्य में व्यक्त दलित, मजदूर और स्त्री की समस्याओं को समझना।

4) दलित कवयित्रियों के काव्य का शिल्पगत अनुसंधान करना।

अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन :

साहित्य केवल कल्पना लोक से निर्मित नहीं होता बल्कि वह कालसंपृक्त और लोकसंपृक्त होता है। इस कारण प्रस्तुत शोध अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन में आता है क्योंकि कविता में व्यक्त दलित पुरुष या स्त्री को समझना है तो उसे ऐतिहासिक

परिप्रेक्ष्य से समझना होगा। अर्थात् भारतीय समाज की सामाजिक संरचना को इतिहास के अनुसार समझना होगा तभी भारतीय मानसिकता समझ में आएगी और सामाजिक संरचना को समझे बिना समाज और साहित्य का मूल्यांकन अधूरा होगा। इसलिए दलित कवयित्रियों के काव्य को समझना हो तो इतिहास, भूगोल, समाज और संस्कृति का भी अध्ययन करना होगा तभी शोध कार्य सफल होगा। इसलिए प्रस्तुत शोध विषय अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन में आता है।

अनुसंधान की पद्धतियाँ :

प्रस्तुत विषय के अनुसंधान में वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक और सर्वेक्षणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा। प्रस्तुत शोध में विषय का वस्तुनिष्ठ और तथ्यात्मक पद्धति से अध्ययन किया जायेगा। इसी आधार पर प्राप्त निष्कर्ष निकाले जायेंगे।

विषय की मौलिकता :

प्रस्तुत शोध के पूर्व इस शीर्षक पर किसी ने भी और कहीं पर भी अनुसंधान नहीं किया है, इस दृष्टि से प्रस्तुत विषय की अपनी मौलिकता है।

विषय की व्याप्ति और सीमा :

शोध-विषय को सुचारू रूप से सम्पन्न होने के लिए उसका सुनियोजन होना अनिवार्य होता है। प्रत्येक शोध-कार्य अपनी सीमा और व्याप्ति में संपन्न होता है। प्रस्तुत शोध के विषय को दलित कवयित्रियों के काव्य तक सीमित रखा है किंतु इन कविताओं का सूक्ष्म और गहराई से अध्ययन करना यह शोध की व्याप्ति है।

अनुसंधान की दृष्टि से मैंने इस शोध को निम्नलिखित षष्ठ अध्यायों में विभाजित किया है-

प्रथम अध्याय - दलित कवयित्रियों के काव्य का विकासक्रम

1.1 सुशीला टाकभौरे का काव्य

1.2 रजनी तिलक का काव्य

1.3 पूनम तुषामड़ का काव्य

1.4 अनिता भारती का काव्य

1.5 रजतरानी मीनू का काव्य

1.6 रजनी अनुरागी का काव्य

1.7 कावेरी का काव्य

द्‌वितीय अध्याय - दलित कवयित्रियों के काव्य में दलित चेतना

2.1 दलित चेतना की अवधारणा और स्वरूप

2.2 दलित चेतना के विविध आयाम

2.2.1 ईश्वर का नकार और मनुष्य का स्वीकार

2.2.2 विषमता का नकार और समता का स्वीकार

2.2.3 अंधश्रद्धा का नकार और वैज्ञानिक दृष्टि का स्वीकार

2.2.4 अस्मिता का बोध

2.2.5 संगठन

2.2.6 समता, बंधुता, स्वातंत्र्य

2.2.7 वेदना, विद्रोह, नकार

2.2.8 भौतिक जीवन की प्रधानता

2.2.9 रुढ़ि परंपरा का विरोध

2.2.10 अन्याय का प्रतिकार

2.2.11 ‘स्व’ की खोज

2.2.12 अस्पृश्यता का नकार

2.2.13 दलित महत्वकांक्षा

2.2.14 पुरानी मिथकों की आलोचना

2.2.15 कर्मकांड का विरोध

2.2.16 सामाजिक न्याय

2.2.17 सामंती संस्कार का नकार

2.2.18 वर्णव्यवस्था का नकार और लोकतंत्र का स्वीकार

तृतीय अध्याय - स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में दलित कवयित्रियों की कविता

3.1 स्त्री विमर्श की अवधारणा

3.2 स्त्री विमर्श और दलित कवयित्रियों का काव्य

3.3 स्त्री की दुय्यमता का नकार

3.4 पुरुषसत्ताक का नकार और स्त्रीत्व का स्वीकार

3.5 स्त्री की अपनी कोई जात नहीं

3.6 लिंगभेद का नकार

3.7 सवर्ण पुरुष से विद्रोह

3.8 दलित पुरुषसत्ताक मानसिकता का नकार

3.9 स्त्री वेदना

3.10 स्त्री शिक्षा

3.11 स्त्री अस्मिता

3.12 पुरुष के पाखंडता का नकार

3.13 स्वत्व की खोज

3.14 पुरातन धार्मिक संस्कार का नकार

3.15 विद्रोही स्त्री

3.16 सामंती सोच का नकार

3.17 केवल स्त्री मुक्ति नहीं बल्कि मनुष्य मुक्ति

3.18 आभूषणों की लालसा का नकार

3.19 'स्व' का अनंत विस्तार

3.20 दोहरा अभिशाप

3.21 हीनता का नकार

3.22 देह और मन पर अपना ही अधिकार

3.23 जातिव्यवस्था ही स्त्री शोषण का तंत्र
3.24 विवाह, परिवार की नई व्याख्या
3.25 लोकतंत्र की माँग
3.26 झाडू की जगह कलम
3.27 सुरक्षा का नकार स्वतंत्रता का स्वीकार
3.28 पुरुषी प्रतीकात्मकता का नकार
3.29 पुरुषी भाषा का दोगलापन
3.30 चौकट लाँघती स्त्री
3.31 जाति का तिरस्कार
3.32 स्त्री की पहचान
3.33 ईश्वर का विरोध
3.34 स्त्री और प्रकृति
3.35 स्त्री और संस्कृति
3.36 प्रेम बंधन है या मुक्ति
चतुर्थ अध्याय - दलित कवयित्रियों के काव्य पर अम्बेडकरी प्रभाव
4.1 दलित कवयित्रियों के काव्य की प्रेरणा और प्रभाव
4.2 अम्बेडकरी विचारों की अवधारणा
4.3 स्त्री कवयित्री और अम्बेडकरी विचार
4.4 समता, बंधुता और स्वातंत्र्य
4.5 शिक्षा, संघठन और संघर्ष
4.6 हिंदू कोड बील और दलित कवयित्री का काव्य
4.7 अहिंसा
4.8 बुद्ध का प्रभाव
4.9 रचनात्मक विद्रोह
4.10 स्त्री अस्मिता और अम्बेडकरी विचार
4.11 स्त्री मुक्ति का आधारस्तंभ

4.12 सामाजिक न्याय

4.13 अंतरजातीय विवाह

4.14 जातिव्यवस्था का निर्मूलन अंतरजातीय से

4.15 चवदार तालाब और कालाराम मंदिर सत्याग्रह

4.16 धर्म ही स्त्री के गुलामी का हथियार

4.17 पुरातन संस्कार का नकार

4.18 स्त्री भी मनुष्य

पंचम अध्याय - दलित कवयित्रियों के काव्य का शिल्प

5.1 काव्य के भाषा का स्वरूप

5.1.1 विद्रोही भाषा

5.1.2 विचारात्मक भाषा

5.1.3 कथात्मक भाषा

5.2 काव्य की भाषिक संरचना

5.3 काव्य के शिल्पगत प्रकार

5.4 शब्द भांडार

5.4.1 तत्सम

5.4.2 तद्भव

5.4.3 देशज

5.4.4 विदेशी

5.5 काव्य शैली

5.5.1 प्रतीकात्मक शैली

5.5.2 व्यंग्यात्मक शैली

5.5.3 सांकेतिक शैली

5.5.4 चित्रात्मक शैली

5.6 दलित काव्य और बिंब

5.7 प्रश्नांकुल वृत्ति और शिल्प

5.8 व्यंग्यात्मकता

5.9 शीर्षक की सांकेतिकता

षष्ठ्म अध्याय - मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

आधार ग्रंथ सूची

1) सुशीला टाकभौरे - 'स्वाती बुँद और खारे मोती', शरद प्रकाशन, नागपुर, प्रथम संस्करण-1993

2) सुशीला टाकभौरे-'हमारे हिस्से का सूरज', शरद प्रकाशन, नागपुर, प्रथम संस्करण-2000

3) रजनी तिलक, 'पदचाप', कदम संस्था, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2000

4) पूनम तुषामड़-'माँ मुझे मत दो', सफाई कर्मचारी आंदोलन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2010

5) रजनी अनुरागी-'बिना किसी भूमिका के' आरोही प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2011

6) अनिता भारती-'एक कदम मेरा भी', बुक्स इंडिया, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2013

7) अनिता भारती-'रूकसाना का घर', स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2015

8) रजतरानी मीनू-'पिता भी तो होते हैं माँ', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2015

शोधछात्रा | *शोध-निर्देशक*

रंजना वामनराव बिरादार | **डॉ.मनोहर भंडारे**